Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 7, December-2021, ISSN 2230-7540

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृहविज्ञान शिक्षण की स्थिति एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

Dr. Rani Mahto*

Assistant Professor, Thakur Durgpal Singh Memorial B.Ed. College, RRBM University, Alwar, Rajasthan

सार – *गृह विज्ञानवस्तुतः गृह अथवा परिवार से सम्बन्धित वह शास्त्र है जो गृहकला, गृह प्रबन्ध एवं सज्जा से सम्बन्धित घरेलू कला, घरेलू अर्थशास्त्र तथा घरेलू प्रशासन की विभिन्न समस्याओं व जटिलताओं का निराकरण करने का सफल प्रयास करता है। यह निर्देशन का विशिष्ट विषय है जिसमें घर परिवार द्वारा व्यक्तियों तथा समूहों द्वारा पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन को समुन्नत बनाने का प्रयास किया जाता है। संकुचित अर्थ में गृह विज्ञान, गृह परिवार, समाज, स्वास्थ्य, खान-पान, आचार-व्यवहार, उपचार आदि की व्यावहारिक समस्याओं के विशिष्ट सन्दर्भ में आधारीय विज्ञानों का अध्ययन मात्र है। ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण की व्यवस्था अच्छी नहीं थी। ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले उपकरण एवं सहायक सामग्रियाँ पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं थी। ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के गृह विज्ञान शिक्षकों की शैक्षिक योग्यताएँ ठीक थी। ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के गृह विज्ञान शिक्षकों को सेमिनार/गोष्ठियों में भाग लेने का पर्याप्त अवसर प्राप्त नहीं हो सका। गृह विज्ञान विषय के अधिकतर अध्यापकों का शैक्षिक अनुभव काफी कम था। ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षकों का कार्यभार अधिक था फिर भी छात्रों के साथ इनके सम्बन्ध अच्छे थे, इनमें गृह विज्ञान अध्यापक के गुण पर्याप्त मात्रा में विद्यमान थे। गृह विज्ञान विषय के प्रति इनकी अभिवृत्ति भी अच्छी थी। ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षकों द्वारा शिक्षण कौशलों के घटकों का प्रयोग कम किया गया। जिन घटकों का प्रयोग किया भी गया, उनकी आवृत्ति बहुत कम थी तथा गुणवत्ता की दृष्टि से प्रयोग का स्तर सामान्य था।*

----------X----------

भूमिका

गृह विज्ञान वस्तुतः गृह अथवा परिवार से सम्बन्धित वह शास्त्र है जो गृहकला,गृह प्रबन्ध एवं सज्जा से सम्बन्धित घरेलू कला, घरेलू अर्थशास्त्र तथा घरेलू प्रशासन की विभिन्न समस्याओं व जटिलताओं का निराकरण करने का सफल प्रयास करता है। यह निर्देशन का विशिष्ट विषय है जिसमें घर परिवार द्वारा व्यक्तियों तथा समूहों द्वारा पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन को समुन्नत बनाने का प्रयास किया जाता है। संकुचित अर्थ में गृह विज्ञान, गृह परिवार, समाज, स्वास्थ्य, खान-पान, आचार-व्यवहार, उपचार आदि की व्यावहारिक समस्याओं के विशिष्ट सन्दर्भ में आधारीय विज्ञानों का अध्ययन मात्र है।

गृह विज्ञान शिक्षण की समस्या

यह दुःखद बात है कि वर्तमान पाठ्यक्रमों के अनुकूल जो भी शिक्षा हम गृह विज्ञान के नाम पर दे रहे हैं वह लक्ष्यविहीन तथा संकुचित है। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि आजकल भारतीय विद्यालयों में सामान्य रूप से गृह विज्ञान की शिक्षा भोजन बनाना, पट्टी बांधना तथा कुछ वस्त्रों की सिचाई कर लेने तक सीमित है। इसका प्रमाण यह हुआ कि गृह विज्ञान की शिक्षा बालिकाओं के लिए अनुपयोगी सिद्ध हो रही है और जिस उदासीनता व निष्क्रियता के साथ यह शिक्षा हम भारतीय नारियों को प्रदान कर रहे हैं उससे न तो कोई लाभ हुआ है और न होने की आशा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि गृह विज्ञान शिक्षण में नवीन प्रेरणा व आदर्शो को रखकर हम इस विषय में नवीन जीवन का संचार करें। यह तभी संभव है जब उपरोक्त सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर गृह विज्ञान के अर्थ,

www.ignited.in

उपयोगिता तथा महत्व को समझा जायेगा और उसी के अनुरूप शिक्षा प्रदान की जायेगी।

समस्या कथन

अध्ययन का शीर्षक निम्न प्रकार है – "अलवर जिले के ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण की स्थिति- एक अध्ययन।"

शोध अध्ययन के उद्देश्य:-

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य:-

1. ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण व्यवस्था के विषय में जानकारी प्राप्त करना।

2. ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों एवं सहायक सामग्रियों की उपलब्धता का पता लगाना।

3. ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले अध्यापन कौशलों का अध्ययन करना।

4. ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत गृह विज्ञान के विद्यार्थियों की उपलब्धि का अध्ययन करना।

जनसंख्या तथान्यादर्श:- जनसंख्या के अन्तर्गत अलवर जिले के वे सभी ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालय सम्मिलित की गई है जहॉ पर गृह विज्ञान विषय का शिक्षण उच्च माध्यमिक स्तर पर हो रहा हैं। अलवर जिले के जिन ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण हो रहा है उनमे से 20 विद्यालयों का चयन यादृच्छिकी न्यादर्शन विधि से किया गया है। इन्हीं विद्यालयों के गृह विज्ञान शिक्षिकाओं तथा छात्राओं से दत्त संग्रह किया गया है।

शोध अध्ययन का सीमांकन:- प्रस्तुत अध्ययन की सीमायें अलवर जिला को निर्धारित किया गया है। अलवर जिला के अन्तर्गत 14 ब्लॉक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों को ही इस शोध के अध्ययन हेतु सम्मिलित किया गया है तथा उनसे प्राप्त दत्तों के आधार पर शोध निष्कर्ष निकाले गये है।

तालिका 1

क्र. सं.	तहसील का नाम	उच्च माध्यमिक विद्यालयों की कुल	संख्या गृह विज्ञान मान्यता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालय	X	XX	XXX
1.	अलवर शहर	89	42	25	08	09
2.	अलवर ग्रामीण	41	17	09	03	05
3.	बानसूर	65	36	09	13	14
4.	बहरोड़	68	34	08	11	15
5.	किशनगढ बास	67	35	06	07	22
6.	कोटकासिम	36	26	12	06	08
7.	लक्ष्मणगढ	86	28	06	09	13
8.	मुडावर	66	41	06	15	20
9.	नीमराणा	62	38	05	14	19
10.	रामगढ	83	17	05	04	08
11.	राजगढ	69	19	07	05	07
12.	रैणी	49	17	04	04	09
13.	तिजारा	49	22	07	06	09
14.	थानागाजी	42	21	06	04	11
15.	कठूमर	90	21	05	05	11
		962	414	120	114	180

► **जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय से प्राप्त स्त्रोत के आधार पर**

नोट-X गृह विज्ञान शिक्षण को सम्पादित करने से संबंधित सुचना देने वाले उच्च माध्यमिक विद्यालय

XX वे उच्च माध्यमिक विद्यालय जहॉ गृह विज्ञान शिक्षण नहीं होने की सूचना प्राप्त हुई।

XXX वे उच्च माध्यमिक विद्यालय जहॉ से किसी प्रकार की सूचना नहीं आई।

तालिका 1 को देखने से स्पष्ट होता है कि अलवर जिला में कुल 414 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण की मान्यता राज्य सरकार के द्वारा दी गई हैं। इन 414 विद्यालयों से सूचना प्राप्त की गई कि किन किन विद्यालयों में गृह विज्ञान की शिक्षण हो रही हैं। इनमें से 120 विद्यालयों

में गृह विज्ञान शिक्षण होने की बात स्वीकार की गई। 114 30 विद्यालयों से गृह विज्ञान शिक्षण होने की सूचना प्राप्त नहीं हुई तथा 180 उच्च माध्यमिक विद्यालयों से किसी प्रकार की सूचना प्राप्त ही नहीं हुई। अतः 120 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में से ही 20 उच्च माध्यमिक विद्यालयों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिकी विधि से किया गया है। इन 20 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कुल 20 गृह विज्ञान शिक्षक कार्यरत है। कार्यरत सभी 20 शिक्षकों से दत्त संग्रह किया गया तथा इन विद्यालयों के राज.बोर्ड 2013 की परीक्षा में बैठे 1604 गृह विज्ञान के छात्रों के प्राप्तांकों को छात्रों की उपलब्धि के रूप में लिया गया। जिन विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण हो रहा था, उन्हीं में से लगभग 15 प्रतिशत विद्यालयों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिकी न्यादर्शन विधि से किया गया।

अध्ययन के उपकरण- इस अध्ययन में दत्त संकलन हेतु जिन उपकरणों का उपयोग किया गया है, वे सभी स्वनिर्मित हैं। इस अध्याय में इन उपकरणों की रचना का वर्णन किया गया है-

(क) गृह विज्ञान शिक्षण कौशल निरीक्षण अनुसूची (H.T.S.O.S)

(ख) उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण - शिक्षकों के लिए एक प्रश्नावली

(ग) गृह विज्ञान शिक्षण सामग्री-चिन्हांकन सूची

अध्ययन में पाया गया कि 20 विद्यालयों में से मात्र 06 विद्यालयों (30 प्रतिशत) में ही गृह विज्ञान कक्ष उपलब्ध थे। इन विद्यालयों में भी प्रति विद्यालय मात्र एक गृह विज्ञानकक्ष ही था। इस प्रकार हम देखते हैं कि अलग से गृह विज्ञानविषय के शिक्षण हेतु विषय कक्ष की अनिवार्यता को भली भाँति नहीं समझा गया है, जबकि गृह विज्ञान कक्ष गृह विज्ञान शिक्षण का वातावरण बनाता है। गृह विज्ञान पढ़ाते समय बीच-बीच में पाठ को रोचक तथा प्रभावी बनाने हेतु अध्यापक को अनेक सहायक सामग्रियों की आवश्यकता पड़ती है। जिन विद्यालयों मे गृह विज्ञान कक्ष नहीं होता, वहाँ सहायक सामग्रियों को, दूसरी जगह से शिक्षण कक्ष में ले जाने में काफी समय नष्ट होता है और कठिनाई भी होती है। प्रायः शिक्षण उनको न ले जाकर जैसे-तैसे ही अपना कार्य पूरा करते हैं।

इन विद्यालयों के जिस कक्ष में गृह विज्ञान शिक्षण हो रहा था, उस कक्ष में उपलब्ध सुविधाओं पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि सूचना पट्ट 14 विद्यालयों (70 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था। अलमारियाँ 14 विद्यालयों (70 प्रतिशत) में ही उपलब्ध थीं। शो केस 03 विद्यालयों (15 प्रतिशत) में ही उपलब्ध थे। श्याम पट्ट सभी 20 विद्यालयों में उपलब्ध था। मैपस्टैण्ड 07 विद्यालयों (35 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था। टेलीवीजन 05 विद्यालयों (25 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था। वीडियो किसी विद्यालय में नहीं था। प्रोजेक्टर वीसीआर 02 विद्यालय (10 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था। पुस्तकालय सभी 20 विद्यालयों में ही थे परन्तु पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की सुविधा मात्र 10 विद्यालयों (50 प्रतिशत) में ही थी। गृह विज्ञान विषय से सम्बन्धित पत्रिकायें मात्र 03 विद्यालय (15 प्रतिशत) में ही आती थीं। ऐतिहासिक यात्रा की व्यवस्था मात्र 02 (10 प्रतिशत) विद्यालयों में ही की जाती थी। इन विद्यालयों में भी भ्रमण हेतु किसी भी प्रकार की वित्तीय सहायता छात्रों को नहीं प्रदान की जाती थी। गृह विज्ञान शिक्षण के लिए अलग से शुल्क किसी विद्यालय में नहीं लिया जाता था।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि समय सारणी के अनुसार कक्षा 11 में चतुर्थ एवं अष्टम चक्र में गृह विज्ञान शिक्षण हेतु निर्धारित कुल कालांशों के लगभग 40 प्रतिशत कालांश निश्चित किये गये। प्रथम एवं पंचम चक्र में गृह विज्ञान शिक्षण हेतु निर्धारित कुल कालांशों का लगभग 30 प्रतिशत कालांश निर्धारित किया गया था। चतुर्थ एवं अष्टम चक्र शिक्षण की दृष्टि में कम उपयोगी होते हैं क्योंकि इनमंे छात्र थके रहते हैं। कक्षा 12 में प्रथम एवं षष्टम चक्र में 50 प्रतिशत कालांश निर्धारित किये गये थे। तृतीय, चतुर्थ एवं सप्तम चक्र में 35 प्रतिशत कालांश गृह विज्ञान शिक्षण हेतु निर्धारित किये गये थे। कक्षा 11 में 12 विद्यालयों में (60 प्रतिशत) में सप्ताह में 06 कालांश तथा अन्य 08 विद्यालयों (40 प्रतिशत) में सप्ताह में 12 कालांश निर्धारित किये गये थे। कक्षा 12 में 12 विद्यालयों में (60 प्रतिशत) में सप्ताह में 06 कालांश तथा अन्य 08 विद्यालयों (40 प्रतिशत) में सप्ताह में 12 कालांश गृह विज्ञान शिक्षण हेतु निर्धारित किये गये थे। अधिकांश अध्यापक समय सारणी में गृह विज्ञानशिक्षण हेतु निर्धारित समय तथा पुस्तकालय में गृह विज्ञान विषय की पुस्तकों की उपलब्धता से संतुष्ट थे।

उच्च माध्यमिक कक्षा में गृह विज्ञान शिक्षण हेतु उपलब्ध उपकरण एवं सहायक सामग्रियाँ-

तालिका- 2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों की विद्यालयों में उपलब्धता का विवरण

क्र.सं.	उपकरण का नाम	विद्यालयों की संख्या	विद्यालयों का प्रतिशत
1.	ग्लोब	19	95
2.	एटलस	16	80

3.	एपिडायस्कोप	01	05
4.	लपेट श्याम पट्ट	18	90
5.	प्रोजेक्टर	03	15
6.	प्रक्षेपी स्लाइडें	03	15
7.	ओवर हैड प्रोजेक्टर	02	10

तालिका 2 को देखने से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों की कक्षाओं में गृह विज्ञान शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों की उपलब्धता की स्थिति अच्छी नहीं थी। ग्लोब 19 विद्यालयों (95 प्रतिशत) में उपलब्ध था। एटलस 16 विद्यालयों (80 प्रतिशत) में उपलब्ध था। एपिडायस्कोप मात्र 01 विद्यालय (05 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था। लपेट श्याम पट्ट 18 विद्यालयों (90 प्रतिशत) में उपलब्ध था। प्रोजेक्टर 03 विद्यालयों (15 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था। प्रक्षेपी स्लाइडें मात्र 03 विद्यालयों (15 प्रतिशत) में ही उपलब्ध थीं। ओवर हैड प्रोजेक्ट मात्र 02 विद्यालयों (10 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था।

तालिका 3 में उच्च माध्यमिक कक्षा में गृह विज्ञान शिक्षण हेतु उपयोगी मॉडलों की उपलब्धता को प्रदर्शित किया गया है।

उच्च माध्यमिक कक्षा में गृह विज्ञान शिक्षण हेतु मॉडल की विद्यालयों में उपलब्धता का विवरण

क्र.सं.	मॉडल का नाम	विद्यालयों की संख्या	विद्यालयों का प्रतिशत
1.	रेशम उत्पादन	1	5 प्रतिशत
2.	शिशु भोजन मॉडल	1	5 प्रतिशत

तालिका 3 को देखने से ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में उच्च माध्यमिक कक्षा में गृह विज्ञान शिक्षण हेतु उपयोगी मॉडलों की उपलब्धता की स्थिति अत्यन्त सोचनीय थी। रेशम उत्पादन एवं शिशु भोजन मॉडल का एक - एक मॉडल ही केवल 01 विद्यालय (5 प्रतिशत) में उपलब्ध था। यद्यपि थोड़े से प्रयास से ही बहुत से मॉडलों का निर्माण शिक्षक स्वयं या छात्रों से करवा कर, उनका प्रयोग करके अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सकते थे, परन्तु ऐसी स्थिति देखने को नहीं मिली। अध्ययन में यह पाया गया कि ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले भोजन एवं रसोई की सामानों उपलब्धता की स्थिति अच्छी नहीं हैं। पाक क्रिया से संबंधित सामानों की भी मात्रा पर्याप्त नहीं थी। कुछ विद्यालयों में छलनी, प्लेट एवं थाली 55 प्रतिशत यानि 11-11 विद्यालयों में इन समानों की उपलब्धता देखने को मिली जो 55 प्रतिशत थी। अन्य सामानों की उपलब्धता सभी उच्च मा0 विद्यालयों में 50 प्रतिशत से कम थी। इस प्रकार से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों गृह विज्ञान शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले पाक सामग्रियों की स्थिति संतोषजनक नहीं थीं।

ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले पाक विद्या के सामानों की उपलब्धता की स्थिति ठीक नहीं थी। गृह विज्ञान में पाक क्रिया को सम्पन्न करने के लिए जिन सामानों की उपलब्धता देखने को मिली, वह काफी संतोष जनक नहीं कही जा सकती यथा आटा 25 प्रतिशत विद्यालयों में विभिन्न प्रकार के चावल दाल 30 प्रतिशत विद्यालयों में, गुलाब जल, लौंग, छुआरा, बादाम आदि क्रमश 75, 85, 90, 80 प्रतिशत विद्यालयों में पाये गए बॉकी अन्य विद्यालयों में पाक क्रिया से संबंधित सामानों की उपलब्ध्ता 10 से 30 प्रतिशत देखने को मिली इससे स्पष्ट होता है कि यहॉ सामानों की उपलब्धता नहीं होगी वहॉ क्रियाओं का संचालन किस प्रकार संभव है? इसी प्रकार जहॉ फूलदान 25 प्रतिशत विद्यालयों में, कूड़ा दान 35 प्रतिशत विद्यालयों में दरवाजे/खिड़की के परदे व छोटी मेज 30 प्रतिशत विद्यालयों में ही उपलब्ध थे, बॉकी बुक सेल्फ, आलमीरा, कुर्सी, स्टूल, बेड, नेम प्लेट 10 प्रतिशत विद्यालयों में पाये गए। झाड़ू, ब्रश, टोकरी आदि 15-25 प्रतिशत विद्यालयों में ही थे।

शिक्षको की योग्यता संबंधी जानकारी प्राप्त करने से ज्ञात होता है कि कुल 20 अध्यापकों में से ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 20 गृह विज्ञान अध्यापकों में से 03 अध्यापकों (15 प्रतिशत) ने माध्यमिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। अन्य अध्यापकों में 14 (70 प्रतिशत) ने द्वितीय श्रेणी में एवं 03 (15 प्रतिशत) अध्यापकों ने माध्यमिक परीक्षा तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 20 अध्यापकों में 04 अध्यापकों (20 प्रतिशत) ने परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी एवं 13 अध्यापकों (65 प्रतिशत) ने द्वितीय श्रेणी एवं 03 (15 प्रतिशत) अध्यापकों ने तृतीय श्रेणी में उच्च माध्यमिक विद्यालयों परीक्षा उत्तीर्ण की थी। 20 अध्यापकों में मात्र 01 अध्यापक (05 प्रतिशत) ने ही स्नातक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। 17 (85 प्रतिशत) अध्यापकों ने द्वितीय एवं 02 अध्यापकों (10 प्रतिशत) ने तृतीय श्रेणी में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की थी। 19 अध्यापकों ने एम.ए. किया था जिनमें 17 अध्यापकों (89.47) ने द्वितीय एवं 02 अध्यापकों (10.53 प्रतिशत) ने तृतीय श्रेणी में परास्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की थी। 02 अध्यापकों ने एस.टी.सी. की डिग्री ली थी एवं दोनों ही द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण थे। एम.एड. उपाधि दो अध्यापकों के

पास थी जिनमें से एक अध्यापक ने पत्राचार माध्यम से द्वितीय श्रेणी में एवं एक ने संस्थागत रूप से प्रथम श्रेणी में एम.एड. परीक्षा उत्तीर्ण की थी। इस प्रकार उपरोक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि अधिकतर गृह विज्ञान शिक्षकों की शैक्षिक योग्यताएँ ठीक थीं एवं अधिकतर अध्यापक प्रशिक्षण प्राप्त थे।

गृह विज्ञान अध्यापकों का कार्यभार - ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों विद्यालयों में गृह विज्ञान अध्यापकों का कार्यभार कितना है, तथा उसकी प्रकृति कैसी है? के विषय में ज्ञात होता है कि 20 अध्यापकों में से 14 अध्यापकों (70 प्रतिशत) को सप्ताह में 25 कालांश से अधिक शिक्षण कार्य करना पड़ता था। 25 कालांशों से कम शिक्षण कार्य करने वाले अध्यापकों की संख्या 06 (30 प्रतिशत) थी। शिक्षण के अतिरिक्त अन्य कार्य भी गृह विज्ञान अध्यापकों को करने पड़ते थे, जिन्हें तालिका 4 मे प्रदर्शित किया गया है-

तालिका 4 गृह विज्ञान विषय के अध्यापकों हेतु शिक्षण के अतिरिक्त अन्य कार्यों का विवरण

क्र. सं.	कार्यभार का नाम	अध्यापकों की संख्या	अध्यापकों का प्रतिशत
1.	प्रशासनिक कार्य	12	60
2.	अनुशासन समिति के सदस्य का कार्य	18	90
3.	खेलकूद	10	50
4.	स्काउट-गाइड	06	30
5.	वाद-विवाद	12	60
6.	एन.सी.सी.	02	10
7.	पत्रिका का सम्पादन	12	60
8.	सांस्कृतिक कार्यक्रम	16	80
9.	प्रवेश सम्बन्धी कार्य	20	100
10.	कक्षा अध्यापक का कार्य	20	100
11.	अन्य कर्य	12	60
	(i) आप शिक्षक संघ के सदस्य हैं	20	100
	(ii) क्या आपका काफी समय शिक्षक संघ के कार्यों में लगता है?	02	10
12.	क्या इन कार्यों के फलस्वरूप घरेलू दायित्वों के निर्वाह में कठिनाई होती है?	08	40

तालिका 4 से स्पष्ट होता है कि शिक्षण कार्य के साथ-साथ कक्षा अध्यापक का कार्य सभी 20 अध्यापकों (100 प्रतिशत) द्वारा किया गया। कक्षा अध्यापक कार्य के अन्तर्गत वे प्रतिदिन दो बार कक्षा के छात्रों की उपस्थिति लेते थे। छह माह में एक बार सबकी फीस वसूल करते थे। उसका हिसाब-किताब रखते थे और उसे विद्यालय कार्यालय में प्रस्तुत करते थे। माह के अन्त में छात्रों की उपस्थिति का हिसाब करते थे। ये ही अध्यापक अपनी कक्षा के छात्रों का परीक्षाफल भी तैयार करते थे। प्रवेश सम्बन्धी कार्य सभी 20 अध्यापकों (100 प्रतिशत) को करना पड़ता था। प्रशासनिक कार्य 12 अध्यापकों (60 प्रतिशत) को तथा अनुशासन समिति के सदस्य का कार्य 18 अध्यापकों (90 प्रतिशत) को करना पड़ता था। खेलकूद का संचालन 10 अध्यापकों (50 प्रतिशत) को करना पड़ता था। वाद विवाद का संचालन एवं पत्रिका का संपादन 12 अध्यापकों (60 प्रतिशत) को करना पड़ता था। वाद-विवाद का संचालन एवं पत्रिका का संपादन 12 अध्यापकों (60 प्रतिशत) को करना पड़ता था। 02 अध्यापकों(10 प्रतिशत) को एन.सी.सी. का भी कार्य देखना पड़ता था। सांस्कृतिक कार्यक्रम 16 अध्यापकों (80 प्रतिशत) द्वारा संचालित किये जाते थे। सभी 20 अध्यापक शिक्षक संघ के सदस्य थे। 02 अध्यापकों (10 प्रतिशत) ने स्वीकार किया, उनका काफी समय शिक्षक संघ के कार्य में व्यतीत होता है। इन कार्यों के फलस्वरूप 08 अध्यापकों (40 प्रतिशत) ने स्वीकार किया कि उन्हें घरेलू दायित्वों के निर्वहन में कठिनाई होती है। अतः स्पष्ट होता है कि शिक्षण के अतिरिक्त गृह विज्ञान अध्यापकों पर अन्य कार्यों का भार भी था और कुछ शिक्षक इन कार्यों के फलस्वरूप घरेलू दायित्वों के निर्वाह में कठिनाई अनुभव करते थे।

तालिका-5 गृह विज्ञान शिक्षकों में निहित गृह विज्ञान शिक्षक के गुण छात्रों से उनके सम्बन्ध एवं गृह विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति का विवरण

क्र.सं.	नाम	मध्यमान	मानक विचलन
1.	शिक्षक-छात्र सम्बन्ध	33.65	4.50
2.	गृह विज्ञान शिक्षक के गुण	9.75	1.97
3.	गृह विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति	77.6	4.02

तालिका 5 को देखने से ज्ञात होता है कि शिक्षक का छात्रों के साथ सम्बन्ध का मध्यमान 33.65 एवं मानक विचलन 4.50 पाया गया। जबकि महत्तम सम्भव प्राप्तांक 39 था। यह इस बात को स्पष्ट करता है कि शिक्षक, छात्रों के साथ काफी अच्छा

सम्बन्ध रखते थे, अर्थात् वे अधिकतर छात्रों को पहचानते थे, उनके नाम से जानते थे। साथ ही साथ यह भी पाया गया कि विभिन्न अध्यापकों के छात्रों के साथ सम्बन्धों में भिन्नता थी। इसी तालिका से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों विद्यालयों के गृह विज्ञान शिक्षकों में निहित, गृह विज्ञान शिक्षक के गुणों का मध्यमान 9.75 एवं मानक विचलन 1.97 पाया गया। इसका महत्तम सम्भव प्राप्तांक 13 था। यह इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों विद्यालयों के गृह विज्ञान शिक्षकों में, गृह विज्ञान शिक्षक के गुण सामान्य से अधिक मात्रा में थे, और एक अध्यापक से दूसरे अध्यापकों में इन गुणों की उपलब्धता में अधिक अन्तर नहीं था। गृह विज्ञान के प्रति शिक्षकेां की अभिवृत्ति का मध्यमान 77.6 एवं 4.02 पाया गया, जबकि महत्तम सम्भव प्राप्तांक 95 था, अतः स्पष्ट होता है कि गृह विज्ञान अध्यापकों की गृह विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति अच्छी थी किन्तु विभिन्न अध्यापकों में यह समान नहीं थी बल्कि अन्तर था

ग्रामीण एवं शहरी उ0 मा0 विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण में प्रयुक्त शिक्षण कौशल-ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों विद्यालयों में गृह विज्ञान अध्यापकों द्वारा प्रयुक्त गृह विज्ञान शिक्षण कौशल के विभिन्न घटकों के प्रयोग की आवृत्ति एवं गुणवत्ता का वर्णन इस अनुच्छेद में किया गया है। प्रत्येक गृह विज्ञान अध्यापक के चार कालांशों के निरीक्षण से पाया गया कि प्रस्तावना कौशल के सभी घटकों का प्रयोग अध्यापकों द्वारा किया गया है। प्रस्तावना कौशल के तीनों घटकों छात्रों के पूर्व ज्ञान का प्रयोग किया गया, प्रकरण की प्रस्तावना में प्रश्नों/प्रासंगिक कथनों का प्रयोग किया गया, प्रस्तावना प्रश्नों से छात्रों की अनुक्रिया प्राप्त की गयी, का सभी 20 अध्यापकों (100 प्रतिशत) द्वारा प्रयोग किया गया। प्रस्तावना कौशल के घटक-छात्रों के पूर्व ज्ञान का प्रयोग किया गया, के प्रयोग की आवृत्ति सर्वाधिक पाई गई। इसका मध्यमान 11.35 तथा मानक विचलन 2.03 पाया गया। अर्थात् औसतन एक अध्यापक ने चार कालांशों में 11.35 बार इस घटक का प्रयोग किया, साथ ही साथ विभिन्न अध्यापकों के प्रयोग की मात्रा में विविधता थी। प्रस्तावना कौशल के घटक छात्रों की अनुक्रिया प्राप्त की गयी, के प्रयोग की आवृत्ति सबसे कम थी। इसका मध्यमान 11.20 एवं मानक विचलन 3.08 पाया गया। अर्थात एक अध्यापक ने चार कालांशों में इस घटक का प्रयोग 11.20 बार किया और विभिन्न अध्यापकों के प्रयोग की आवृत्ति में विविधता थी। गुणवत्ता की दृष्टि से घटक पूर्व ज्ञान का प्रयोग किया गया, का प्रयोग सबसे अधिक सफलतापूर्वक किया गया। इसका मध्यमान 03.18 एवं मानक विचलन 0.59 पाया गया। अर्थात् गुणवत्ता की दृष्टि से इस घटक के प्रयोग का स्तर अच्छा था और विभिन्न अध्यापकों के प्रयोग की गुणवत्ता में विविधता थी। घटक-प्रश्नों-प्रासंगिक कथनों का प्रयोग किया गया, के प्रयोग की गुणवत्ता भी अच्छी थी तथा विभिन्न अध्यापकों द्वारा इसके प्रयोग में काफी विविधता थी। अतः कहा जा सकता है कि विभिन्न अध्यापकों द्वारा प्रस्तावना कौशल के विभिन्न घटकों के प्रयोग में गुणवत्ता की दृष्टि से जहां समानता थी, वहीं प्रयोग की आवृत्ति की दृष्टि से काफी विविधता थी।

व्याख्या कौशल के अधिकाँश घटकों का प्रयोग सभी अध्यापकों द्वारा किया गया। चार कालांशों में गृह विज्ञान अध्यापकों द्वारा व्याख्या कौशल के घटक-छात्रों के समझ की जांच के लिए बीच-बीच में प्रश्न पूछ गये- का प्रयोग सबसे अधिक किया गया। इसका मध्यमान 12.15 एवं मानक विचलन 1.53 पाया गया। अर्थात् चार कालांशों में औसतन एक अध्यापक ने इसका प्रयोग लगभग 12 बार किया। मानक विचलन से पता चलता है कि विभिन्न अध्यापकों के प्रयोग की आवृत्ति में अन्तर था। घटक-उचित समय पर विराम का प्रयोग किया गया, का प्रयोग सबसे कम हुआ। इसका मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 3.20 एवं 1.23 पाया गया। अर्थात् इस घटक का प्रयोग चार कालांशों में प्रत्येक अध्यापक द्वारा 3.20 बार किया गया, जो बहुत कम है। विभिन्न अध्यापकों द्वारा इस घटक के प्रयोग में असमानता पाई गई। गुणवत्ता की दृष्टि से व्याख्या कौशल के घटक उचित समय पर विराम का प्रयोग किया गया, का प्रयोग सर्वाधिक सफलतापूर्वक किया गया। इसका मध्यमान 03.29 एवं मानक विचलन 00.49 पाया गया। अर्थात् इस घटक के प्रयोग की गुणवत्ता अच्छी थी तथा विभिन्न अध्यापकों द्वारा इसके प्रयोग के गुणवत्ता की मात्रा में असमानता थी। घटक-स्पष्ट एवं निष्कर्षात्मक कथनों का प्रयोग किया गया का प्रयोग सबसे कम सफलतापूर्वक किया गया। इसका मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 02.95 एवं 0.63 पाया गया। अर्थात् इस घटक के प्रयोग की गुणवत्ता का स्तर अच्छा था। इस विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि व्याख्या कौशल का प्रयोग ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों विद्यालयों में अच्छ हो रहा था। यद्यपि अध्यापकों द्वारा विभिन्न घटकों के प्रयोग की आवृत्ति में काफी अन्तर था, किन्तु गुणवत्ता की दृष्टि से विभिन्न घटकों के प्रयोग में खास अन्तर नहीं पाया गया।

प्रश्न कौशल के घटक - आलोचनात्मक सजगता जागृत करने हेतु प्रश्न पूछे गये का प्रयोग सबसे अधिक पाया गया। इसका मध्यमान 11.05 एवं मानक विचलन 1.98 पाया गया अर्थात् चार कालांशों में औसतन एक अध्यापक ने लगभग 11 बार इसका प्रयोग किया। घटक संकेतात्मक प्रश्न पूछे गये, के

प्रयोग की आवृत्ति सबसे कम थी। इसका मध्यमान 2.55 एवं मानक विचलन 1.95 पाया गया। अर्थात औसतन एक अध्यापक ने चार कालांशों में इस घटक का प्रयोग 2.16 बार किया। गुणवत्ता की दृष्टि से आलोचनात्मक सजगता जाग्रत करने हेतु प्रश्न पूछे गये, का प्रयोग सर्वाधिक सफलतापूर्वक हुआ। इसका मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 02.86 एवं 0.58 पाया गया। अर्थात् गुणवत्ता की दृष्टि से इस घटक के प्रयोग का स्तर अच्छा था। घटक-प्रश्नों को पुनः प्रेषित किया गया, का प्रयोग सबसे कम सफलतापूर्वक हुआ।

पुर्नबलन कौशल के घटक छात्रों ने अच्छे उत्तर श्यामपट्ट पर लिखे गये का प्रयोग सभी 20 अध्यापकों (100 प्रतिशत) द्वारा किया गया। इसका मध्यमान 2.90 एवं मानक विचलन .96 पाया गया। अर्थात् कहा जा सकता है कि पुनर्बलन कौशल के घटक का प्रयोग सभी शिक्षकों द्वारा किया गया, परन्तु इसकी आवृत्ति अच्छी नहीं थी। शिक्षकों में चार कालांशों में इस घटक का प्रयोग मात्र लगभग तीन बार किया। गुणवत्ता की दृष्टि से इसका मध्यमान 03.07 एवं मध्यमान 0.66 पाया गया। अर्थात् गुणवत्ता की दृष्टि से यह घटक श्यामपट्ट प्रयोग कौशल के किसी घटक का प्रयोग सभी अध्यापकों द्वारा नहीं किया गया। घटक-पाठ के मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर प्रदर्शित किया गया, ध्यान केन्द्रित करने हेतु मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित किया गया, शब्द वाक्य सीधी रेखा में लिखे गये और श्यामपट्ट पर लिखे गये अक्षर स्पष्ट और सुडौल थे, का प्रयोग 19 अध्यापकों (95 प्रतिशत) द्वारा किया गया, जिसमें ध्यान केन्द्रित करने हेतु मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित किया गया। घटक का मध्यमान शयाम पट्ट कौशल के सभी घटकों में सर्वाधिक 3.55 था एवं मानक विचलन 1.23 था अर्थात् इस घटक का प्रयोग की आवृत्ति शिक्षकों द्वारा चार कालांशों में लगभग 3 या 4 थी। घटक समय ग्राफ/चित्र/रेखाचित्र बनाये गये एवं यह सभी छात्रों के देखने योग्य थे, का प्रयोग 10 अध्यापकों (50 प्रतिशत) द्वारा किया गया। घटक विशिष्ट बिन्दुओं पर रंगीन चाक का प्रयोग किया गया, का प्रयोग 14 अध्यापकों (70 प्रतिशत) द्वारा किया। गुणवत्ता की दृष्टि से श्याम पट्ट कौशल के घटक शब्द/वाक्य सीधी रेखा में लिखे गये का मध्यमान सर्वाधिक 02.86 एवं 0.78 पाया गया। अर्थात् गुणवत्ता की दृष्टि से इस घटक का प्रयोग का स्तर अच्छा था। घटक चित्र/रेखाचित्र/लेख सभी छात्रों के देखने योग्य थे, का प्रयोग सबसे कम सफलतापूर्वक हुआ। इसका मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 01.89 एवं 01.28 था। अर्थात् गुणवत्ता की दृष्टि से इस घटक के प्रयोग का स्तर अच्छा नहीं था। उपरोक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि श्यामपट्ट प्रयोग कौशल के प्रयोग की आवृत्ति एवं गुणवत्ता जहां कम थी, वहीं पर विभिन्न अध्यापकों के प्रयोग में भी आवृत्ति एवं गुणवत्ता की दृष्टि से असमानता विद्यमान थी। कक्षा-कक्ष प्रबन्ध एवं अनुशासन कौशल से सम्बन्धित दत्तों पर दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि गृह विज्ञान शिक्षकों के कक्षा अनुशासन सामान्य स्तर का था। इसको बनाने हेतु यद्यपि सभी 20 अध्यापकों (100 प्रतिशत) द्वारा प्रयास किया गया, परन्तु प्रयास भी आवृत्ति कम थी और जो प्रयास किये गये, वे भी गुणवत्ता की दृष्टि से अच्छे नहीं थे।

सहायक सामग्री के चयन एवं प्रयोग कौशल के कुछ ही घटकों का प्रयोग हुआ है। जिन घटकों का प्रयोग हुआ भी है, उनका प्रयोग भी कम अध्यापकों द्वारा किया गया। सबसे अधिक प्रयोग मानचित्र संबंधी घटक का 10 अध्यापकों (50 प्रतिशत) द्वारा किया गया। मॉडल से सम्बन्धित घटक का प्रयोग किसी अध्यापक द्वारा नहीं किया गया। विषय वस्तु को स्पष्ट करने हेतु चित्र, चार्ट से सम्बन्धित घटकों का प्रयोग भी कम अध्यापकों द्वारा किया गया। घटक-दिखाये गये मानचित्र स्पष्ट थे, का प्रयोग का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 3.63 एवं 1.18 था। अर्थात् चार कालांशों में एक अध्यापक ने औसतन 3.65 बार इस घटक का प्रयोग किया। विभिन्न अध्यापकों द्वारा इस घटक के प्रयोग की आवृत्ति में काफी अन्तर पाया गया। गुणवत्ता की दृष्टि से घटक दिखाये गये मानचित्र स्पष्ट थे, का प्रयोग इस कौशल के घटकों में सबसे अधिक सफलतापूर्वक हुआ। इसका मध्यमान 1.75 एवं मानक विचलन 1.21 पाया गया। अर्थात् इस घटक के प्रयोग का स्तर भी गुणवत्ता की दृष्टि से ठीक नहीं थी। पाठ समापन कौशल के घटक छात्रों के प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर दिया गया, का प्रयोग सर्वाधिक 18 अध्यापकों (90 प्रतिशत) द्वारा किया गया। इसका मध्यमान 4.65 एवं मानक विचलन 1.34 था। अर्थात् औसतन एक अध्यापक ने इस घटक का प्रयोग चार कालांशों में 4.65 बार किया। घटक समुचित गृहकार्य दिया गया, के प्रयोग की आवृत्ति पाठ समापन कौशल के अन्य घटकों की तुलना में सबसे कम थी। इसका मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 2.75 एवं .96 पाया गया, अर्थात् एक अध्यापक ने चार कालांशों में औसतन इस घटक का प्रयोग 2.75 बार किया। गुणवत्ता की दृष्टि से घटक-छात्रों के प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर दिया गया का प्रयोग सबसे अधिक सफलतापूर्वक किया गया। इसका मध्यमान 2.27 एवं मानक विचलन 1.00 पाया गया। अर्थात् गुणवत्ता की दृष्टि से इस घटक के प्रयोग की गुणवत्ता सामान्य थी। घटक छात्रों की सहायता से श्यामपट्ट सारांश निर्मित किया गया का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 8.96, 4.83 पाया गया जो तीनों घटकों में सबसे कम सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया। जिसका स्तर ठीक नहीं था। उपरोक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि पाठ समापन कौशल के घटकों का प्रयोग ठीक

हुआ और प्रयोग की गुणवत्ता का स्तर भी लगभग सामान्य था।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षकों द्वारा प्रस्तावना कौशल एवं पुनर्बलन कक्षा प्रबन्ध एवं अनुशासन एवं व्याख्या कौशल का प्रयोग ही सामान्य रूप में किया गया।

अन्य किसी भी कौशल का प्रयोग समुचित रूप एवं उचित मात्रा में नहीं किया गया। सहायक सामग्री के चयन एवं प्रयोग कौशल की स्थिति बहुत ही सोचनीय थी। मात्रा की दृष्टि से इस कौशल का प्रयोग बहुत कम हुआ- साथ ही प्रयोग की गुणवत्ता भी बहुत खराब थी। जबकि गृह विज्ञान एक ऐसा अध्ययन विषय है, जिसके शिक्षण में पाठ को स्पष्ट एवं रोचक बनाने के लिए अधिक मात्रा में एवं सफलतापूर्वक सहायक सामग्रियों के चयन एवं प्रयोग की आवश्यकता पड़ती है। सहायक सामग्रियों की सहायता के बिना गृह विज्ञान विषय की बहुत सी विषय वस्तु को स्पष्ट कर पाना बहुत कठिन होता है। प्रश्न कौशल, श्यामपट्ट प्रयोग, पाठ समापन कौशल के प्रयोग की स्थिति भी ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालयों विद्यालयों में अच्छी नहीं थी।

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षकों द्वारा घटकों के प्रयोग का विवरण-विभिन्न विद्यालयों के उच्च माध्यमिक विद्यालयों कक्षाओं में चार कालांशों में गृह विज्ञान शिक्षण में प्रयुक्त घटकों की संख्या, घटकों के प्रयोग की आवृत्ति और गुणवत्ता के वितरण को तालिका 18 में दर्शाया गया है।

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान के छात्रों की विभिन्न वैकल्पिक विषयों में उपलब्धि- अध्ययन से ज्ञात होता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विभिन्न विद्यालयों के गृह विज्ञान के छात्रों की गृह विज्ञान विषय में उपलब्धि का मध्यमान वं मानक विचलन क्रमशः 48.02 एवं 3.99 पाया गया, जबकि इन्हीं छात्रों के सभी विषयों के प्राप्तांकों का प्रतिशत का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 45.46 एवं 4.81 पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि गृह विज्ञान में छात्रों की उपलब्धि कुल विषयों की उपलब्धि की तुलना में अच्छी थी और विभिन्न विद्यालयों के छात्रों की गृह विज्ञान की उपलब्धि में काफी समानता थी। अन्य वैकल्पिक विषयों में संगीत का मध्यमान 60.75 एवं मानक विचलन 0.55 पाया गया। संगीत विषय में छात्रों की उपलब्धि, गृह विज्ञान के छात्रों की उपलब्धि से अच्छी थी, पायी गयी। कला विषय का मध्यमान 56.67 एवं मानक विचलन 1.59 पाया गया। कला विषय में छात्रों की उपलब्धि गृह विज्ञान विषय के छात्रों की उपलब्धि से अच्छी थी। भूगोल विषय में छात्रों की उपलब्धि का मध्यमान 52.04 एवं मानक विचलन 2.69 पाया गया। भूगोल विषय में छात्रों की उपलब्धि गृह विज्ञान विषय के छात्रों की उपलब्धि से अच्छी थी। तर्कशास्त्र विषय मे छात्रों की उपलब्धि का मध्यमान 50.11 एवं मानक विचलन 2.75 था। तर्कशास्त्रविषय में छात्रों की उपलब्धि गृह विज्ञान विषय के छात्रों की उपलब्धि से अच्छी थी। भूगोल, संगीत एवं तर्कशास्त्रचारों विषयों में छात्रों की उपलब्धि गृह विज्ञान में अच्छी थी। कला, भूगोल, संगीत एवं तर्कशास्त्रचारो विषय प्रयोगात्मक हैं। संस्कृत का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 47.02 एवं 05.05 पाया गया। अर्थशास्त्र विषय का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 44.63 एवं 5.3 पाया गया। नागरिक शास्त्र विषय में मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 46.25 एवं 3.59 पाया गया समाजशास्त्र विषय में मध्यमान एवं मानक विचलन 46.24 एवं 6.28 पाया गया। इन चारों विषयों में छात्रों की उपलब्धि गृह विज्ञान विषय में छात्रों की उपलब्धि से कम थी। तथा विभिन्न विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि में गृह विज्ञान की तुलना में काफी समानता थी। अंग्रेजी में उपलब्धि का मध्यमान 42.9 एवं मानक विचलन 5.78 पाया गया। अंग्रेजी विषय में छात्रों की उपलब्धि तालिका में सब विषयों में सबसे कम थी। मनोविज्ञान विषय में छात्रों की उपलब्धि का मध्यमान 48.1 एवं मानक विचलन 1.77 पाया गया।

तालिका 6 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की गृह विज्ञान में उपलब्धि एवं गृह विज्ञान सम्बन्धी विभिन्न चरों के मध्य सह सम्बन्ध

क्र.सं.	चर का नाम	सहसम्बन्ध गुणांक
1.	गृह विज्ञान अध्यापकों द्वारा प्रयुक्त घटकों की संख्या एवं छात्रों की उपलब्धि में सह सम्बन्ध	0.567
2.	गृह विज्ञान अध्यापकों द्वारा प्रयुक्त घटकों की गुणवत्ता एवं छात्रों की उपलब्धि में सह सम्बन्ध	0.173
3.	गृह विज्ञान अध्यापकों द्वारा प्रयुक्त घटकों की आवृत्ति एवं छात्रों की उपलब्धि में सह सम्बन्ध।	0.365
4.	गृह विज्ञान अध्यापकों के शिक्षण अनुभव एवं छात्रों की उपलब्धि में सह सम्बन्ध	0.299
5.	गृह विज्ञान अध्यापकों में निहित गृह विज्ञान शिक्षक के गुण एवं छात्रों की उपलब्धि में सह सम्बन्ध	-0.186
6.	शिक्षक-छात्र सम्बन्ध एवं छात्रों की उपलब्धि में सह सम्बन्ध	-0.389
7.	गृह विज्ञान अध्यापकों की गृह विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति एवं छात्रों	0.214

	की उपलब्धि में सह सम्बन्ध	
8.	विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण हेतु उपलब्ध उपकरण, एवं सहायक सामग्रियों की संख्या एवं छात्रों की उपलब्धि में सह सम्बन्ध	-0.174

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की गृह विज्ञान में उपलब्धि एवं शिक्षण सम्बन्धी विभिन्न चरों के मध्य सहसम्बन्ध के विवरण को तालिका 6 में दर्शाया गया है। इस तालिका को देखने से ज्ञात होता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों स्तर के गृह विज्ञान विषय के शिक्षण के समय शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त घटकों की संख्या एवं छात्रों की गृह विज्ञान विषय की उपलब्धि में सहसम्बन्ध गुणांक 0.567 पाया गया। यह गुणांक 0.01 स्तर पर सार्थक हैं। अतः कहा जा सका है कि शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त घटकों की संख्या एवं छात्रों की गृह विज्ञान विषय में उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध है। गृह विज्ञान अध्यापकों द्वारा प्रयुक्त घटकों की गुणवत्ता तथा छात्रों की गृह विज्ञान में उपलब्धि में सहसम्बन्ध गुणांक 0.173 पाया गया। जो यह गुणांक 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त घटकों की गुणवत्ता एवं छात्रों की गृह विज्ञान विषय में उपलब्धि में सहसम्बन्ध नहीं है। गृह विज्ञान अध्यापकों द्वारा प्रयुक्त घटकों की आवृत्ति एवं छात्रों की गृह विज्ञान विषय में उपलब्धि का सहसम्बन्ध गुणांक 0.365 पाया गया। यह गुणांक .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि अध्यापकों द्वारा प्रयुक्त घटकों की आवृत्ति एवं छात्रों की उपलब्धि में सम्बन्ध नहीं है। गृह विज्ञान अध्यापकों के शिक्षण अनुभव एवं छात्रों की उपलब्धि में सहसम्बन्ध गुणांक 0.299 पाया गया। यह गुणांक .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि गृह विज्ञान अध्यापकों के शिक्षण अनुभवों एवं छात्रों की उपलब्धि में सहसम्बन्ध नहीं है। गृह विज्ञान अध्यापकों मंे निहित गृह विज्ञान शिक्षक के गुण एवं छात्रों की उपलब्धि में सहसम्बन्ध गुणांक -0.186 पाया गया। यह गुणांक .05 स्तर पर सार्थक नहीं है, अर्थात कहा जा सकता है कि गृह विज्ञान अध्यापकों में निहित गृह विज्ञान शिक्षक के गुण एवं छात्रों की उपलब्धि में सहसम्बन्ध नहीं है। शिक्षक छात्र सम्बन्ध एवं छात्रों की उपलब्धि में सहसम्बन्ध गुणांक -0.389 पाया गया जो कि .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि शिक्षक-छात्र सम्बन्ध एवं छात्रों की उपलब्धि में सहसम्बन्ध नहीं है। गृह विज्ञान अध्यापकों की गृह विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति एवं छात्रों की उपलब्धि में सहसम्बन्ध गुणांक 0.214 पाया गया जो कि .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि गृह विज्ञान अध्यापकों की गृह विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति एवं छात्रों की उपलब्धि में सहसम्बन्ध नहीं है। उच्च माध्यमिक विद्यालय में गृह विज्ञान शिक्षण हेतु उपलब्ध उपकरण एवं सहायक सामग्रियों की संख्या एवं छात्रों की उपलब्धि में सहसम्बन्ध गुणांक 0.174 पाया गया जो कि .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण में उपलब्ध उपकरण एवं सहायक सामग्रियों की संख्या एवं छात्रों की उपलब्धि में सहसम्बन्ध नहीं है। मात्र गृह विज्ञान अध्यापकों द्वारा प्रयोग घटकों की संख्या एवं छात्रों की उपलब्धि के मध्य घनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। विभिन्न चरों के साथ सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध के न पाये जाने का सम्भावित कारण राज. बोर्ड की परीक्षा में प्राप्त उपलब्धि की वैधता एवं विश्वसनीयता का अभाव प्रतीत होता है। स्वकेन्द्र एवं परिचित विद्यालयों में केन्द्र होने के कारण परीक्षा प्रणाली सही ढंग से संचालित नहीं होने के कारण भी पास होने वालों का प्रतिशत बढ़ा है, बढ़ती नकल की प्रवृत्ति एवं सही मूल्यांकन के अभाव से ही सम्भवतः उपरोक्त चरों के साथ सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

परिणाम

इस अध्ययन से प्राप्त परिणामों का विवरण निम्नवत है-

1. अलवर जिला के 414 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में से 120 उच्च माध्यमिक विद्यालय जहॉ गृह विज्ञान विषय में अध्ययन होने की सूचना प्राप्त हुई उनमें से 20 ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों का चयन यादृच्छि विधि से किया गया उन 20 उच्च माध्यमिक विद्यालयों में से गृह विज्ञान कक्ष मात्र 06 विद्यालयों (30 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था। जिन कक्षों में गृह विज्ञान शिक्षण हो रहा था, उन कक्षों में मात्र श्यामपट्ट ही सभी 20 विद्यालयों (100 प्रतिशत) में पाया गया। अन्य सुविधाएं जैसे मैप स्टैण्ड, शो केस, प्रोजेक्टर, टेलीविजन, चार्ट, मॉडल आदि शून्य से 35 प्रतिशत विद्यालयों में ही पाये गये। पुस्तकालय सभी 20 विद्यालयों (100 प्रतिशत) में थे परन्तु उनमें अधिकतर विद्यालयों में गृह विज्ञान विषय की पर्याप्त पुस्तकें नहीं थीं। पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की सुविधाएँ मात्र 10 विद्यालयों (50 प्रतिशत 9 में ही उपलब्ध थीं। लगभग 25 प्रतिशत अध्यापकों ने स्वीकार किया कि गृह विज्ञान शिक्षण हेतु नियत समय पर्याप्त नहीं है। मात्र 03 विद्यालयों (15 प्रतिशत) में ही गृह विज्ञान विषय से सम्बन्धित पत्रिकाएं आती थीं। केवल 02 विद्यालयों (10 प्रतिशत) द्वारा शैक्षिकभ्रमण की व्यवस्था की जाती थी।

2. 20 अध्यापकों में से मात्र 03 अध्यापकों ने माध्यमिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। 04 अध्यापकों ने उच्च माध्यमिक विद्यालयों की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। परास्नातक परीक्षा 19 अध्यापकों में से किसी अध्यापक ने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण नहीं की। 02 अध्यापक एम.एड. की डिग्री धारक थे, जिनमें से एक अध्यापक ने संस्थागत विद्यार्थी के रूप में अध्ययन किया था एवं एक ने पत्राचार माध्यम से एम.एड. की डिग्री ली थी। बी.एड. की डिग्री 20 अध्यापकों में 16 अध्यापकों (80 प्रतिशत) के पास थी एवं प्रशिक्षण के समय 12 अध्यापकों (75 प्रतिशत9 ने ही गृह विज्ञान विषय में विशेषीकरण किया था।

3. लगभग 60 प्रतिशत अध्यापकों का शिक्षण अनुभव 08 वर्षों से अधिक था। समाचार पत्र सभी अध्यापक पढ़ते थे, किन्तु गृह विज्ञान से सम्बन्धित सूचनाओं का संकलन 11 अध्यापकों (55 प्रतिशत) ने करने की बात स्वीकार की। सेमिनार/गोष्ठियों में सम्मिलित होने का अवसर मात्र 03 अध्यापकों (15 प्रतिशत) को ही मिला। गृह विज्ञान पढ़ाने में 09 अध्यापकों (45 प्रतिशत) को सबसे ज्यादा आनन्द आता था। स्वास्थ्य गृह विज्ञान एवं गृह सज्जा गृह विज्ञान पढ़ाने में आनन्द आने वाले अध्यापकों का प्रतिशत क्रमशः 20 एवं 25 था। 11 शिक्षक (55 प्रतिशत) अपने स्थायी घर से विद्यालय आते थे। 12 अध्यापकों (60 प्रतिशत) का आवास विद्यालय से 02 कि.मी. से कम दूरी पर था।

4. 14 अध्यापकों (70 प्रतिशत) को सप्ताह में 25 कालांश से अधिक शिक्षण कार्य करना होता था। शिक्षण कार्य के साथ-साथ कक्षा अध्यापक का कार्य सभी 20 अध्यापकों (100 प्रतिशत) द्वारा किया गया। प्रवेश सम्बन्धी कार्य सभी 20 अध्यापकों (100 प्रतिशत), प्रशासनिक कार्य 12 अध्यापकों (60 प्रतिशत), अनुशासन समिति के सदस्य का कार्य 18 अध्यापकों (90 प्रतिशत), सांस्कृतिक कार्य का संचालन 16 अध्यापक (80 प्रतिशत) तथा खेलकूद, स्काउट गाइड एवं वाद-विवाद का संचालन क्रमशः 10 अध्यापकों (50 प्रतिशत), 6 अध्यापकों (30 प्रतिशत) एवं 12 अध्यापकों (60 प्रतिशत) को करना पड़ता था।

5. ग्लोब 19 विद्यालयों (95 प्रतिशत), एटलस 16 विद्यालयों (80 प्रतिशत) में उपलब्ध था। एपिडायस्कोप मात्र 01 विद्यालय (05 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था जो कि अच्छी स्थिति में नहीं था। लपेट श्यामपट्ट 18 विद्यालयों (90 प्रतिशत) में उपलब्ध था। प्रोजेक्टर 03 विद्यालयों (15 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था। प्रक्षेपी स्लाइडें मात्र 03 विद्यालयो(15 प्रतिशत) में ही उपलब्ध थीं। ओवर हैड प्रोजैक्टर (ओ.एच.पी.) मात्र 02 विद्यालय (10 प्रतिशत) में ही उपलब्ध था। उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले उपलब्ध उपकरणों एवं सहायक सामग्रियों का मध्यमान 22.4 एवं मानक विचलन 16.49 पाया गया। यह तथ्य चिन्हांकन सूची द्वारा ज्ञात किये गये।

6. ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के गृह विज्ञान शिक्षकों का छात्रों के साथ सम्बन्ध का मध्यमान 33.65 एवं मानक विचलन 4.50, अध्यापकों में निहित गृह विज्ञान शिक्षक के गुण का मध्यमान 9.75 एवं मानक विचलन 1.97 तथा गृह विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 77.6 एवं मानक विचलन 4.02 पाया गया। जबकि इनका महत्तम सम्भव प्राप्तांक क्रमशः 39, 13 एवं 95 था।

7. ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण के समय अध्यापकों द्वारा प्रस्तावना, पुनर्बलन, कक्षा-प्रबन्ध एवं अनुशासन एवं व्याख्या कौशल का प्रयोग ही सामान्य रूप में किया जा रहा था। अन्य कौशलों का प्रयोग समुचित रूप से एवं उचित मात्रा में नहीं किया जा रहा था। सहायक सामग्रियों के चयन एवं प्रयोग कौशल की स्थिति बहुत ही शोचनीय थी। प्रश्न, पुनर्बलन, श्यामपट्ट प्रयोग, पाठ समापन एवं कक्षा-कक्ष प्रबन्ध कौशल के घटकों के प्रयोग की स्थिति भी आवृत्ति एवं गुणवत्ता की दृष्टि से अच्छी नहीं थी। चार कालांशों में अध्यापकों द्वारा विभिन्न घटकों के प्रयोग की संख्या 21 से 31 के मध्य थी। औसतन लगभग 25.5 घटकों का प्रयोग अध्यापकों द्वारा किया गया।

8. ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विभिन्न विद्यालयों के छात्रों की गृह विज्ञान में कुल उपलब्धि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 48.02 एवं 03.99 पाया गया।

9. ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान विषय के छात्रों की गृह विज्ञान में उपलब्धि का मध्यमान 48.02 पाया गया। यह उपलब्धि छात्रों के अन्य वैकल्पिक विषयों की उपलब्धि के मध्यमान नागरिक शास्त्र 46.25, अंग्रेजी 42.9, संस्कृत

47.02, समाजशास्त्र 46.24 तथा कुल विषयों के प्राप्तांकों के प्रतिशत के मध्यमान 45.46 से अधिक किन्तु यह भूगोल विषय के मध्यमान 52.04, मनोविज्ञान विषय के मध्यमान 48.1, शिक्षाशास्त्र विषय के मध्यमान 50.19, कला विषय के मध्यमान 56.67 तथा संगीत विषय के मध्यमान 60.75 से कम थी।

निष्कर्ष

प्राप्त परिणामों के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गये-

(1) ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण की व्यवस्था अच्छी नहीं थी।

(2) ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले उपकरण एवं सहायक सामग्रियाँ पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं थी।

(3) ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के गृह विज्ञान शिक्षकों की शैक्षिक योग्यताएँ ठीक थी।

(4) ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के गृह विज्ञान शिक्षकों को सेमिनार/गोष्ठियों में भाग लेने का पर्याप्त अवसर प्राप्त नहीं हो सका।

(5) गृह विज्ञान विषय के अधिकतर अध्यापकों का शैक्षिक अनुभव काफी कम था।

(6) ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षकों का कार्यभार अधिक था फिर भी छात्रों के साथ इनके सम्बन्ध अच्छे थे, इनमें गृह विज्ञान अध्यापक के गुण पर्याप्त मात्रा में विद्यमान थे। गृह विज्ञान विषय के प्रति इनकी अभिवृत्ति भी अच्छी थी।

(7) ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षकों द्वारा शिक्षण कौशलों के घटकों का प्रयोग कम किया गया। जिन घटकों का प्रयोग किया भी गया, उनकी आवृत्ति बहुत कम थी तथा गुणवत्ता की दृष्टि से प्रयोग का स्तर सामान्य था।

(8) ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की गृह विज्ञान विषय में उपलब्धि सामान्य थी। साथ ही साथ विभिन्न विद्यालयों के छात्रों की उपलब्धि में समानता पायी गई।

(9) ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान के छात्रों की गृह विज्ञान विषय में उपलब्धि भूगोल, शिक्षाशास्त्र, कला एवं संगीत के अतिरिक्त अन्य सभी वैकल्पिक विषयों से कम थी।

(10) ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की गृह विज्ञान विषय में उपलब्धि एवं गृह विज्ञान अध्यापकों की गृह विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति में सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

(11) ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में गृह विज्ञान शिक्षण हेतु उपलब्ध उपकरण एवं सामग्रियों की संख्या एवं छात्रों की उपलब्धि में सहसम्बन्ध नहीं पाया गया।

सन्दर्भ

राज्य सरकार, जयपुर -क्रियात्मक अनुसंधान एवं शोध सार 2006-07

गुप्ता, एम.प् -भारतीय शिक्षा की समस्याएँ, शारदा पुस्तक, नई दिल्ली

सुखिया एच.पी.-शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर,

बूच.एम.बी- सर्वे ऑफ एजूकेशन, मोल्यूम-1,2,3,4 एवं 5, एन0सी0ई.आर.टी नई दिल्ली

मानव संसाधन विकास मंत्रालय - सर्वशिक्षा अभियान स्कूल शिक्षा विभाग, नई दिल्ली

डॉ.जी.पी.शैरी - गृह विज्ञान शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

Corresponding Author

Dr. Rani Mahto*

Assistant Professor, Thakur Durgpal Singh Memorial B.Ed. College, RRBM University, Alwar, Rajasthan